अंगद समान पुरुषार्थ

Source: www.brahma-kumaris.com (Main Website) | www.bkgoogle.com (BK Google)

- **Tivra Purusharth – Hindi poem**

ठोस इरादे लेकर चलना बनकर अंगद का पांव
ज्ञान की ज्योति जलाना हर शहर और हर गांव

विघ्न सभी तुम पार करना भरकर ऊँची उड़ान
संग तुम्हारे शक्ति दाता फिर क्यों आती थकान

सदा याद रखना तुम बच्चे हो वैराग्य वृत्ति वाले
कैसी भी मुश्किल आए कभी नहीं घबराने वाले

बन्धनमुक्त हो जाना खुद को नष्टोमोहा बनाकर
देहभान मिटा देना सत्य स्वरूप स्मृति में लाकर

बेहद के वैरागी बनकर तुम भय से मुक्ति पाना
परिस्थितियों को हराकर तुम आगे बढ़ते जाना

सर्वशक्तिमान संग तुम्हारे मन को ये समझाना
विघ्नों के आगे स्वयं को अचल अडोल बनाना

कहे कोई कुछ भी किंतु सदा एकरस तुम रहना
स्वमान विस्मृत ना हो चाहे कुछ भी पड़े सहना

परीक्षा कोई भी आए किंतु सदा मुस्काते जाना
विघ्नों की बारिश में खुद को प्रभावमुक्त बनाना

कैसी भी असुविधा हो किंतु ख़ुशी नहीं गंवाना
हर परिस्थिति में खुद को तुम समतुल्य बनाना

किसी भी हलचल का अंश ना रहे तुम्हारे मन में
अंगद जैसी अचल अडोलता आ जाए जीवन में

अपना आत्मभान जगाकर नष्टोमोहा बन जाना
मन में विनाशी दुनिया प्रति वैराग्य वृत्ति जगाना

देह अभिमान छोड़कर तुम अशरीरी बन जाना
यही अवस्था पाकर तुम परमात्म मिलन मनाना

ॐ शांति।

by: BK Mukesh bhai - bkmukesh1973@gmail.com

For More **Poems**, visit – www.bkofficial.com/poems

OR scan this QR code with your phone camera ->